ग्रामाभ्युदयादेव देशाभ्युदयः
गोविन्द बल्लभ पन्त कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय
कृषि मौसम विज्ञान विभाग, कृषि महाविद्यालय
पन्तनगर–263145 उधम सिंह नगर (उत्तराखण्ड)
फोन नम्बरः 05944–233032

ग्रामीण कृषि मौसम सेवा बुलेटिन, जनपद – नैनीताल

उपमहानिदेशक (कृषि मौसम विज्ञान), भारत मौसम विज्ञान विभाग, पुणे निदेशक, मौसम केन्द्र, देहरादून

वर्षः 27 अंकः 17 बुलेटिन अवधिः 28 फरवरी – 4 मार्च 2018 दिनः मंगलवार दिनाँकः 27 फरवरी, 2018

मौसम पूर्वानुमानः

भारत सरकार के **पृथ्वी विज्ञान मंत्रालय** द्वारा वित्त पोषित एवं **भारत मौसम विज्ञान विभाग** द्वारा संचालित ग्रामीण कृषि मौसम सेवा परियोजना के अन्तर्गत **राष्ट्रीय मौसम पूर्वानुमान केन्द्र, भारत मौसम विज्ञान विभाग, मौसम भवन, नई दिल्ली** द्वारा पूर्वानुमानित तथा **मौसम केन्द्र, देहरादून** द्वारा संसोधित पूर्वानुमानित मध्यम अवधि मौसम आँकड़ों के आधार पर कृषि मौसम विज्ञान विभाग में स्थित कृषि मौसम विज्ञान प्रक्षेत्र इकाई (AMFU), गो0 ब0 पन्त कृषि एवं प्रौद्यो0 विश्वविद्यालय, पन्तनगर द्वारा **नैनीताल जिले के पर्वतीय क्षेत्रों में अगले पाँच दिनों** में निम्न मौसम रहने की संभावना व्यक्त की जाती है :–

पूर्वानुमानित मौसम तत्व	मौसम पूर्वानुमान – नैनीताल				
	28–02–2018	**01–03–2018**	**02–03–2018**	**03–03–2018**	**04–03–2018**
वर्षा (मिमी0)	0	0	0	3	0
अधिकतम तापमान (डिग्री से.ग्रे.)	20	19	17	16	17
न्यूनतम तापमान (डिग्री से.ग्रे.)	11	10	9	8	7
बादल आच्छादन	मध्यम बादल	मध्यम बादल	घने बादल	घने बादल	मध्यम बादल
अधिकतम सापेक्षित आर्द्रता (प्रतिशत)	85	85	90	95	85
न्यूनतम सापेक्षित आर्द्रता (प्रतिशत)	40	40	45	50	40
वायु की औसत गति (कि0मी0 प्रतिघंटा)	008	008	006	006	006
वायु की दिशा	उत्तर–पश्चिम	उत्तर–पश्चिम	उत्तर–पश्चिम	उत्तर–उत्तर–पश्चिम	उत्तर–उत्तर–पश्चिम

भारत मौसम विज्ञान विभाग के नैनीताल स्थित मौसम विज्ञान वेधशाला (समुद्रतल से ऊँचाई–2084 मीटर) के प्रेक्षणानुसार विगत सात दिनों (20 से 26 फरवरी 2018 सुबह 8:30 तक) में आसमान साफ रहने के साथ कही–कही मध्यम बादल छाये रहे व लगभग 7.4 मिमी0 वर्षा हुई तथा अधिकतम तापमान 16.0 से 18.7 डि0से0 एवं न्यूनतम तापमान 3.1 से 5.6 डि0से0 के बीच रहा। ऐसे अनुमानित मौसम में गो0ब0 पन्त कृषि एवं प्रौद्यो0 विश्वविद्यालय, पन्तनगर के वैज्ञानिकों द्वारा इस क्षेत्र के कृषक भाइयों को सलाह दी जाती है कि इस मौसम में विभिन्न फसलों के लिए खेतों में निम्नानुसार कार्यक्रम अपनायें।

कृषि मौसम परामर्श

फसल प्रबन्धः

- ❖ गेहूँ की फसल में आवश्यकतानुसार सिंचाई करें तथा कीड़े एवं अन्य बीमारियों के प्रकोप हो रहा हो तो अनुमोदित कीटनाशियों का प्रयोग करें।
- ❖ सरसों की फसल की कटाई एवं मड़ाई करें।

- गन्ने में खरपतवारों के नियंत्रण हेतु वैल्लोर के4 दवा की 2 कि0ग्रा0 मात्रा 750 लीटर पानी में घोल बनाकर बुवाई के 3 दिन के अंदर प्रयोग करें।
- इस दवा के उपलब्ध न होने पर ऐट्राजीन की 4 कि0ग्रा0 मात्रा अथवा मैट्रीब्यूजीन की 2 कि0ग्रा0 मात्रा को 750 लीटर पानी में घोल बनाकर बुवाई के 3 दिन के अंदर प्रयोग करें।
- गेहूँ की फसल मे निचली पत्तियो पर पीले रंग के फफोले दिखाई देने पर या पत्तियो पर भूरे धब्बे या नोक से पत्तियो के पीले पड़ कर मुरझाने पर प्रोपीकोनाजोल 25 ई0 सी0 का 1 लीटर/हैक्टेयर की दर से छिड़काव करें।
- गेहूँ के उन्नत कृषि यंत्रो की सहायता के खरपतवार का नियन्त्रण करे।
- बसंत कालीन गन्ने के लिए 120 कि0ग्रा0 नत्रजन, 60 कि0ग्रा0 फासफोरस तथा 40 कि0ग्रा0 पोटाश का प्रयोग करें। नत्रजन की 1/3 मात्रा तथा फासफोरस व पोटाश की पूर्ण मात्रा बुवाई के समय प्रयोग करें।
- प्रति हैक्टेयर बुवाई के लिए गन्ने के तीन आँख वाले 40–50 हजार टुकड़ों का प्रयोग करें।
- बसंत कालीन गन्ने की फसल की बुवाई 15 मार्च तक पूर्ण करें।
- गन्ने की अनुमोदित प्रजातियों का चुनाव अपने क्षेत्र के अनुसार ही करें।
- गन्ने के टुकड़ों का बीज शोधन अवश्य करें। शोधन ऐगलाल या इमासान 6 के 0.25 प्रतिशत घोल में 10 मिनट तक डुबाकर करें।

उद्यान प्रबन्धः

- ऊँचें पर्वतीय क्षेत्रों में जहाँ पर बर्फ पिघल रही है नत्रजन खाद की प्रथम आधी मात्रा शीतोष्ण फल वृक्षो के थालों में प्रयोग करें।
- शीतोष्ण फल प्रजातियों के फल के बगीचों में फूल आने पर परागण हेतु मधुमक्खियों के बक्सों को लगभग 2–3/है0 की दर से रखें।
- बीजू आलू कन्दों की सफाई कर मैन्कोजेब रसायन के 0.25 प्रतिशत के घोल में आधे घंटे तक उपचारण कर छाया में सुखायें तथा मार्च में बुवाई हेतु बीज सुरक्षित रखें।
- मटर की फसल में गुड़ाई करें, साथ ही नत्रजन की कमी को देखते हुये यूरिया की टॉप ड्रेसिंग करें।
- मध्यम एवं ऊँचे पर्वतीय क्षेत्रो में यदि बैंगन, टमाटर, शिमला मिर्च तथा मिर्च की रोपाई की जानी है। तो इस माह इन बीजो की नर्सरी में बुवाई करें।
- घाटी क्षेत्रो मे यदि तापक्रम बढ़ गया हो तो फ्रासबीन अर्का कोमल तथा कन्टेण्डर किस्मों की बुवाई करें।
- घाटी क्षेत्रो मे प्याज एवं लहसुन की खड़ी फसल में यदि परपल ब्लॉच रोग की समस्या दिखे तो 25 ग्राम ब्लाईटॉक्स रसायन 10 लीटर पानी में घोलकर छिड़काव करें।
- मटर में यदि लीफ माईनर कीट का प्रकोप हो तो इमिडाक्लोप्रिड रसायन की 0.08 प्रतिशत घोल का छिड़काव करें।
- आलू की बुवाई हेतु खेत की तैयारी कर अन्तिम सप्ताह में कुफरी ज्योति किस्म की बुवाई करें। साथ ही 4–5 कुन्तल गोबर की खाद के साथ 2.5 कि0ग्रा0 डी0ए0पी0 तथा 2 कि0ग्रा0 पोटाश उर्वरक प्रयोग करें।
- मटर में पौधों की सूखने एवं निचली पत्तियां पीले पड़ने की अवस्था में कार्बेन्डाजिम 1.0 ग्राम प्रति लीटर पानी की दर से घोल बनाकर जड़ों की सिंचाई करें ।
- प्याज और लहसुन की पत्तियॅा उपर से पीली पड़ने पर प्रोपीकोनाजोल या टेबूकोनाजोल का 1 मिली0 प्रति ली0 पानी की दर से घोल बनाकर छिड़काव करे।
- टमाटर में पीलापन लिए हुए भूरे धब्बे दिखाई देने पर मैन्कोजेब 2.5 से 3.0 ग्राम प्रति लीटर की दर से घोल बनाकर छिड़काव करें।
- गोभी वर्गीय सब्जियो में पत्ती धब्बा रोग के नियत्रंण हेतु मैन्कोजेब का 2.5 ग्रा0 प्रति ली0 पानी की दर से घोल बनाकर छिड़काव करे।

पशुपालन प्रबन्धः

- सभी नवजात पशुओं को कृमिनाशक दवा अवश्य दें।
- सभी भेड़ व बकरियों के बच्चों को पी0पी0आर0 का टीकाकरण करवाए।
- डेयरी मवेशियों में थनेला रोग से बचाव के लिए, थन से दूध को पूरी तरह निकाल दे तद्पश्चात् थन को पानी से अच्छी तरह धों लें।

- चारा फसलों, एल्फाल्फा और बरसीम क्लोवर साथ ही साथ ओट की क्रमशः प्रत्येक 12–14 और 18–20 दिन पर सिंचाइ करें।
- बरसीम क्लोवर और एल्फाल्फा को सुखाकर सूखे चारे के रूप में भण्डारण करें या सिलेज में पविर्तित करके जब हरा चारा कम हो या उपलब्ध ना हो तब प्रयोग करें।
- पशुओं के बैठने का स्थान समतल होता चाहिए जिससे उनकी उत्पादन क्षमता प्रभावित न हो तथा इस समय नवजात पशुओं के रख–रखाव पर विशेष ध्यान दें।
- जानवरों में प्रसव दर को ध्यान में रखते हुए पशुशाला को अच्छी तरह साफ–सुथरा, सूखा, रोशनीदार, हवादार होना चाहिए। इसके लिए नालियों में तथा आस–पास सूखे चूने का छिड़काव करें तथा जानवर के नीचे सूखा चारा बिछा दें। प्रसव के उपरांत स्वच्छता का पूरा ध्यान रखें। ठंड का समय आ गया है अतः ठंड से बचाव हेतु पशुपालक इसकी ओर ध्यान दें।
- भैंस के 1–4 माह के नवजात बच्चों की आहार नलिका में टाक्सोकैराविटूलूरम (केचुआँ/पटेरा) नामक परजीवी पाए जाते है। इसे पटेरा रोग भी कहते है। समय से उपचार न होने की दशा में लगभग 50 प्रतिशत से अधिक नवजात की मृत्यु इसी परजीवी के कारण होती है। इस रोग की पहचान – नवजात को बदबूदार दस्त होना और इसका रंग काली मिट्टी के समान होता है, कब्ज होना, पुनः बदबूदार दस्त होना व इसके साथ केचुआँ या पटेरा का होना, नवजात द्वारा मिट्टी खाना आदि लक्षणों के आधार पर इस रोग की पहचान कर सकते है। रोग की पहचान होते ही पीपराजीन नामक औषधी का प्रयोग कर सकते हैं।
- पटेरा रोग से बचाव हेतु प्रसव होने के 10 दिन पश्चात् 10–15सी0सी0 नीम का तेल नवजात को पिला दें। तदुपरांत 10 दिन पश्चात् पुनः 10–15 सी0सी0 नीम का तेल पिला दें। बथुए का तेल इसका रामबाण इलाज है।

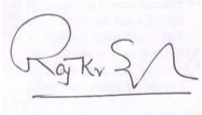

डा0 आर0 के0 सिंह
प्राध्यापक एवं प्रिंसिपल नोडल अधिकारी
ग्रामीण कृषि मौसम सेवा,
गो.ब. पन्त कृषि एवं प्रौद्यो. विश्वविद्यालय, पन्तनगर